पैसा फेंको, मुखड़ा देखो

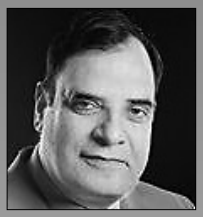

आलोक मेहता

(पत्रकारिता की दुनिया में अपनी बेबाक टिप्पणियों के लिए प्रसिद्ध पद्मश्री डॉ आलोक मेहता वर्तमान में नईदुनिया के प्रधान सम्पादक हैं। उन्होंने दैनिक हिन्दुस्तान, नवभारत टाइम्स, दैनिक भास्कर और आउटलुक में सम्पादक रहकर पत्रकारिता को नई ऊंचाइयों तक पहुंचाया। श्री मेहता एडिटर्स गिल्ड ऑफ इंडिया के अध्यक्ष रह चुके हैं और भारतीय प्रेस परिषद के भी सदस्य रहे हैं।)

बिहार विधान सभा चुनाव में निर्वाचन आयोग की कड़ी निगरानी के बावजूद राजनीतिक पार्टियां और उम्मीदवारों ने करोड़ों रुपए बहाए। लेन-देन में अनाड़ी पकडे भी गए। बिहार बहुत गरीब, पिछड़ा, कम शिक्षित माना जाता हो, लेकिन सत्ता की राजनीति से जुड़े नेता, अधिकारी, ठेकेदार, दलाल पैसा फेंककर अपनी पहचान और ताकत दिखाने में पूरी तरह सक्षम हैं। राजनीति के उस्ताद मुर्गी, गाय, भैंस, खेत-खलिहान, सड़क, पुल, बांध, मोटरगाड़ी, झोपड़ी, शानदार इमारत, पेड़, खदान, दुकान तक से मोटी कमाई के रास्ते जानते हैं। ऐसी हालत में निर्वाचन आयोग ने पैसे के बल पर चुनावी तांडव करने वालों की घेराबंदी के कुछ खास इंतजाम किए। आयोग के डंडे के डर से मीडिया में 'पेड न्यूज' की बीमारी पर भी नियंत्रण दिखाई दिया है। यह एक शुभ संकेत है। पिछले दो चुनावों के दौरान नेताओं या उनके समर्थकों द्वारा मोटी रकम देकर मनचाहे ढंग से रिपोर्ट छपवाने की कोशिशों ने मीडिया के चेहरे पर कालिख पोत दी थी। यह बात अलग है कि मीडिया को धन के मायाजाल में फंसाने का सिलसिला बिहार के ही दो बड़े नेताओं ने 35 साल पहले शुरू किया था। उसकी झलक दिल्ली में भी देखने को मिलती थी। खेल कांग्रेसियों ने शुरू किया, लेकिन धीरे-धीरे अधिकांश प्रभावशाली पार्टियों के नेता यह हथकंडा अपनाने लगे। नेताओं से अधिक बेशर्मी नामी-गिरामी और सिद्धांतवादी कहे जाने वाले कुछ पत्रकार-सम्पादक दिखाते रहे। आलम यह रहा है कि भाई लोग हर खेमे में 'प्रसाद' ग्रहण करने में नहीं चूकते थे। पिछले महीनों के दौरान कुछ अंग्रेजी अखबारों में प्रतिष्ठित पत्रकारों के लेख छपने तथा भारतीय प्रेस परिषद द्वारा जांच-पड़ताल करने पर यह मुद्दा राष्ट्रीय स्तर पर चर्चा का विषय बना। लेकिन दिल्ली में कुछ बड़े नेता 25 साल पहले भी बिकाऊ पहलवान पत्रकारों को 'लिफाफा' देने के बाद उनके ही विश्वस्त ईमानदार साथियों को ठहाका लगाकर सूचित कर देते थे -'देखिएगा, ले गया है। अब तो वह ठीक से छापेगा और कुछ दूसरों को देकर उनसे भी अच्छा छपवा देगा।' स्वाभाविक है -शरीफ लोगों के लिए हंसी के साथ कही गई यह बात तमाचे से कम नहीं होती थी।

'द हिंदू' के प्रसिद्ध पत्रकार पी. साईंनाथ अब 'पेड न्यूज' से दुखी-परेशान हैं, लेकिन शायद उन्हें दिल्ली के राजनीतिक गलियारों में बरसों से फैल रही गंदगी का आभास नहीं हुआ था। हमसे कभी पूछते तो कुछ पुराने शर्मनाक किस्से उन्हें सुना देते। ऐसी दो-तीन घटनाओं का उल्लेख यहां किया जा सकता है। 1977 में इमरजेंसी हटने के बाद हुए लोकसभा चुनाव के दौरान रायबरेली-अमेठी, उत्तर प्रदेश की चुनावी रिपोर्टिंग के लिए एक बड़े अखबार के ब्यूरो प्रमुख अपनी कम्पनी के अलावा कांग्रेस पार्टी के एक पदाधिकारी से 20 हजार रुपए लेकर गए। इंदिरा गांधी और कांग्रेस की भारी विजय की सम्भावना वाली खबरें उन्होंने छापीं। खबरें गलत साबित हुईं और कांग्रेस पार्टी इंदिरा गांधी सहित बुरी तरह पराजित हो गई। लेकिन परिणाम आने के कुछ दिनों बाद इसी पत्रकार ने उसी पदाधिकारी से चार हजार रुपए अधिक खर्च होने का दुखड़ा सुनाकर बकाया रकम मांगी। कांग्रेसी नेता उस विपदा में किससे वह पैसे मांगकर देते। इसी तरह कुछ वर्षों के बाद भाजपा के एक बड़े नेता के लिए दलाली करने वाले पत्रकार 'फंड' का इंतजाम कर कुछ अन्य पत्रकारों को साथ लेकर यात्रा कवर करने गए। साथियों को थोड़ा-बहुत हिस्सा देकर शराब की कई बोतलें खाली कर दीं। उधर नेता गिरफ्तार हो गए और इधर 'पेड पार्टी' सोती रह गई। समाचार एजेंसियों की मेहरबानी से सम्बंधित अखबारों को खबर मिली। तीसरी घटना बिहार में ही दो दशक पहले रहे एक मुख्यमंत्री के दरबार की है। मुख्यमंत्री अपने दो नजदीकी मित्रों से बात कर रहे थे। उनमें से एक दिल्ली के वरिष्ठ पत्रकार थे। बातचीत लम्बी चलती रही और निजी सहायक चपरासी से दो बार पर्चियां भेजता रहा। फिर पर्ची न देखने की आशंका होने पर खुद अंदर जाकर बताने लगा कि दिल्ली से फलां पत्रकार भी आए हैं। मुख्यमंत्री ने झल्लाकर उत्तर दिया - 'अभी और आधा घण्टा बिठाओ। लेख छापने का पांच हजार रुपए लेने ही तो आया है।' सहायक चला गया और बिकाऊ पत्रकार को 45 मिनट इंतजार करना पड़ा। पक्ष-विपक्ष की खतरनाक खबरों पर मालिकों की सौदेबाजी की घटनाओं पर तो एडीटर्स गिल्ड 15 साल पहले भी रिपोर्ट दे चुकी थी।

बहुत सीमित मेहनताना पाने वाले पचासों पत्रकार पूरी ईमानदारी और निष्ठा के साथ काम कर रहे हैं। समाज की यह सामान्य धारणा गलत है कि व्यक्ति कम आमदनी के कारण बेईमानी और भ्रष्ट होता है। ईमानदारी केवल अधिक धनार्जन से आती होती, तो देश में बड़े पैमाने पर काला धन और भ्रष्टाचार ही नहीं होता। यह तो व्यक्ति की अपनी नियत, संस्कार और मानसिकता से जुड़ा मामला है।